शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 मई 2014

'जंगलतंत्रम्' उपन्यास का विश्लेषणात्मक अध्ययन

संजय चैहान, अजेन्द्र सिंह (शोधार्थी)
भाषा अध्ययनशाला
देवी अहिल्या विश्विद्यालय
इंदौर, मध्यप्रदेश, भारत

शोध संक्षेप

श्रवण कुमार गोस्वामी की उपन्यास यात्रा का प्रारंभ ही पंचतंत्रात्मक व्यंग्य उपन्यास 'जंगलतंत्रम' से हुआ है। 'जंगलतंत्रम' की उपदेशात्मकता और वैचारिक दृष्टि वर्तमान लोकतंत्र की सृजन संवेदना में काफी हद तक समानता है। जंगलतंत्रम उपन्यास अपनी प्रभवोत्पादकता में प्रतीकात्मक और व्यंग्य प्रधान रचना है। जंगलतंत्रम का उद्देश्य सड़ते हुए राजनैतिक तंत्र और अनीतिपूर्ण व्यवस्था के परिवर्तन द्वारा एक स्वस्थ सामाजिक प्रणाली को विकसित करना है। प्रस्तुत शोध पत्र में उपन्यास के शिल्प वैशिष्ट्य का अध्ययन किया गया है ।

भूमिका

समकालीन राजनीति पर व्यंग्यात्मक प्रहार करने वाले उपन्यासकारों में श्रवण कुमार गोस्वामी का नाम उल्लेखनीय है। 'जंगलतंत्रम' उपन्यास में उन्होंने राजनेता, प्रशासक, पूंजीपति एवं आम आदमी के लिए क्रमश: सिंह, मोर, नाग एवं चूहे के प्रतीकों के माध्यम से आजादी के बाद के पूरे लोकतंत्र की अंदरूनी प्रक्रिया का कच्चा चिट्ठा खोलकर रख दिया है। उपन्यास का अंत चूहे की मौत से होता है, क्योंकि चूहा तीनों के कार्यकलापों के खिलाफ विद्रोह कर देता है। आज की राजनीति में आम आदमी की यही नियति है। 'जंगलतंत्रम' उपन्यास नये शिल्प और नये तेवर का उपन्यास है। लेखक ने फैंटेसी के माध्यम से आजादी के बाद की राजनीति पर गहरा और करारा व्यंग्य किया है।

व्यक्तित्व

हिन्दी के मूर्धन्य साहित्यकार श्री श्रवण कुमार गोस्वामी का जन्म 22 नवम्बर 1936 को बिहार अब झारखण्ड प्रांत के रांची में हुआ। सुशिक्षित परिवार में जन्मे श्री गोस्वामी ने एम.ए.हिन्दी साहित्य और पी-एच. डी. की उपाधि हासिल की। इसके बाद उन्होंने रांची विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के आचार्य पद की शोभा बढ़ाई। वे इस्पात मंत्रालय भारत सरकार की हिन्दी सलाहकार समिति के वर्षों सदस्य रहे।

कृतित्व

उन्होंने अपने साहित्यिक जीवन में अनेक रचनाएँ लिखी। आलोच्य उपन्यास उनकी पहली कृति थी। यहाँ पर उनके अब तक प्रकाशित हुए साहित्य की जानकारी विस्तार से दी जा रही है: 'जंगलतंत्रम' उपन्यास राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 1979, भारत बनाम इंडिया, सत साहित्य प्रकाशन 205 चावड़ी बाजार दिल्ली प्रथम संस्करण 1983, दपर्ण झूठ ना बोले, सन्मार्ग प्रकाशन 16 यू. वी. बैंगलोर रोड, दिल्ली, प्रथम संस्करण 1993, राहुकेतु, राजपाल एण्ड संस,कश्मीरी गेट दिल्ली, मेरे मरने के बाद,

राजपाल एंड संस, कश्मीरी गेट दिल्ली, प्रथम संस्करण 1985, एक टुकड़ा सच, सन्मार्ग प्रकाशन, प्रथम संस्करण 1992, आदमखोर, प्रतिभा प्रतिष्ठान, दक्षिणी राय स्टेट नेताजी सुभाष मार्ग नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 1992, केंद्र और परिधि, विनोद पुस्तक मंदिर, डॉ.रांगेय राघव मार्ग आगरा प्रथम संस्करण 1996, केजरी उपन्यासिका जनसत्ता कलकता वार्षिकी अंक 1998 में प्रकाशित, हस्तक्षेप, किताबघर प्रकाशन, अंसारी रोड, दरियागंज नई दिल्ली, कहानी एक नेताजी की, राजपाल एंड संस, प्रथम संस्करण 2005।

शोध तथा आलोचना : नागपुरी और उसके वृहद स्त्रय, कमल प्रकाशन, अपर बाजार रांची प्रथम संस्करण 1971 नागपुरी शिष्ट साहित्य, रिसर्च पब्लिकेशन दरियागंज नई दिल्ली प्रथम संस्करण 1972 नागपुरी भाषा परिषद पटना प्रथम संस्करण 1976 राधाकृष्ण भारतीय साहित्य के निर्माता सीरिज में साहित्य एकेडमी रवींद्र भवन सुरक्षा मार्ग नई दिल्ली प्रथम संस्करण 2003

नाटक : कल दिल्ली की बारी है: सत्साहित्य प्रकाशन प्रथम संस्करण 1979, समय: पंचशील प्रकाशन, चौड़ा रास्ता जयपुर, प्रथम संस्करण 1979

प्रहसन : सती सुधार केन्द्र: साहित्य भवन प्रा. लिमिटेड, इलाहाबाद प्रथम संस्करण 1998 , हमारी मांगे पूरी करो ज्ञान गंगा प्रकाशन, नई दिल्ली प्रथम संस्करण 1999,

एकांकी सोना: सन्मार्ग प्रकाशन, प्रथम संस्करण 1979

विविध : लोह कपाट के पीछे: जेल संस्मरण जगतराम एंड संस प्रथम संस्करण 1979 , अटलजी के नाम एक धारावाहिक पत्र: भारतीय प्रकाशक संस्थान, नई दिल्ली प्रथम संस्करण 2000, उड़ने वाला तालाब हास्य-व्यंग्य सन्मार्ग प्रकाशन प्रथम संस्करण 2004

कहानी संग्रह : जिस दिये में तेल नहीं: भुवन प्रकाशन, रांची प्रथम संस्करण 1957

संस्मरण रांची तब और अब: राजश्री प्रकाशन, नई नगड़ा टोली, रांची प्रथम संस्करण 2008 ,

मुख्य संपादित ग्रन्थ : डॉ.बुल्के स्मृति ग्रन्थ: सत्यभारती पुरूलिया रोड, रांची, प्रथम संस्करण 1987, रामचरित मानस का मुण्डारी अनुवाद: स्वामी स्वरूपानंद : सरस्वती देश धन देवा संस्थान मिशन कोर्ट कलकत्ता प्रथम संस्करण 1988 , श्रवण कुमार गोस्वामी पर केंद्रित पुस्तक उपन्यासकार श्रवण कुमार गोस्वामी: संपादक: डॉ.सुरेशचंद्र, संकल्प प्रकाशन, मुम्बई, प्रथम संस्करण 1995 यह पुस्तक प्रकाशक के पास उपलब्ध नहीं है।

श्रवण कुमार गोस्वामी के उपन्यास दो अन्य भाषाओं में अनुदित हुए हैं। उनमें 'राहुअम केतुअम' मलयालम भाषा में अनुदित हुआ है। यह पूर्णा पब्लिकेशन कालीकट से प्रकाशित हुआ। 'जंगलतंत्रम' उपन्यास का अनुवाद डॉ.आर.बी.सिंह ने 2004 में किया। यह कांफ्रेंस इंटरनेशनल नई दिल्ली से प्रकाशित हुआ।

विश्लेषण

कथानक जैसी कोई चीज उपन्यास में नहीं है वरन् पात्रों के चरित्रों ने ही कथानक का निर्माण किया है और विस्तार भी। उपन्यास में सिंह बनाम राजनेता, मोर बनाम प्रशासक, नाग बनाम पूंजीपति और चूहा बनाम आम आदमी। जंगलतंत्रम उपन्यास के ये चार घटक हैं। इन्हीं चार जंतुओं की चारित्रिक विशेषताओं के माध्यम से गोस्वामी जी ने आज की राजनीति के तहत चलने वाली लोकतांत्रिक शासन-प्रणाली के

जनविरोधी चरित्र को उजागर किया है। आज की राजनीति में सिंह, मोर और नाग किस तरह अपने-अपने क्षुद्र स्वार्थों के लिए पारस्परिक गठजोड़ किए हुए है। फेंटेसीनुमा इस उपन्यास से यह बखूबी समझ में आता है। चूहा इसे समझता भी है कि इनकी इस जोड़-तोड़ का असली शिकार तो वही है, पर वह इससे उबर नहीं पाता। यह आज के आम भारतीय की नियति है। उसके पास आज विकल्प नहीं बचा है। गुलामी के दिनों में उसका लक्ष्य आजादी था, पर अब सब आजाद हैं और गुलामी की जिंदगी जीने को मजबूर है। आम आदमी को छोटे-छोटे प्रलोभनों, सुख-सुविधाओं की आस बराबर कमजोर बनाए हुए है। लेखक ने बताया है कि वह संघर्ष के लिए खड़ा होता है, पर उसी की वर्गीय और परंपरागत दुर्बलताएं उसकी पीठ पर बोझ बनी हुई हैं। गोस्वामी जी का उपन्यास अपनी सार्थक प्रतीकात्मकता और धारदार भाषा शैली के आद्योपांत निर्वाह के कारण एक अनूठा प्रभाव छोड़ता है। भारतीय राजनीति रात में ही करवटें बदलती है इसलिए लेखक ने अध्यायों को रातों में ही बांटा है। "जंगलतंत्रम" के सभी पात्र चाहे वह सिंह या मोर, या नाग या चूहा प्रतीकात्मक भी हैं और वर्ग विषेष के प्रतिनिधि भी। 'जंगलतंत्रम' में अंतर्निहित विशिष्ट ध्वनि 'जंगलराज' की है जो प्रणाली न्याय विवेक और तर्क पर आधारित नहीं होती, इसके तहत जिस व्यवस्था की कल्पना की जा सकती है, उसका आधार पाशविक बल ही होता है। इस तंत्र में निरीहों के प्रश्न को ही प्राकृतिक व्यवस्था मान लेने का चलन रहा है। किंतु यही तथाकथित व्यवस्था जब हमारे सामाजिक-राजनैतिक जीवन का यथार्थ बन जाए तो वह विघटनकारी तंत्र हमारी संपूर्ण मानवीय संवेदना और बौद्धिक चिंतन को कुण्ठित कर देने के लिए पर्याप्त है। फिर तो लोक या जनहित का प्रदर्शन स्वार्थ-लाभ या वैयक्तिक सिद्धियों के लिए सिर्फ दिखावा ही बन कर रह जाता है। तब यह स्थिति उत्पन्न होती है, जब इस तंत्र के भीतर से फूटने वाला बिखराव विषबेल के रूप में हमारी सामाजिक परम्परा से लिपटकर उसका दम घोंट देता है। अतः यह कहा जा सकता है कि जंगलतंत्रम स्वरूप और गठन दोनों ही लिहाज से एक प्रतीकात्मक व्यंग्य रचना है। इसके शिल्प विधान पर पंचतंत्र का किंचित प्रभाव अवश्य दिखाई देता है। पंचतंत्र के प्रमुख पात्रों की तरह इसके पात्र भी पशु-पक्षी हैं। पंचतंत्र की कहानियाँ पाँच तंत्रों में विभक्त है। जंगलतंत्रम का शिल्प विधान भी पच्चीस रातों में पढ़ी जाने वाली कथा विधा के रूप में रचित है। जंगलतंत्रम का व्यंग्य प्रतीकात्मक में निहित है। डॉ.देवेश ठाकुर ने लिखा है, "इस प्रतीकात्मकता के माध्यम से उपन्यासकार ने बड़े कौशल के साथ राजनेता, प्रशासन और पूंजीपति के वास्तविक चेहरों से नकाब उतारा है। आज की इस निकृष्ट व्यवस्था में ये तीनों तत्व मिलकर सामान्य जन का दोहन कर रहे है। श्री श्रवण कुमार गोस्वामी ने व्यवस्था की इस स्थिति पर प्रतीकों के माध्यम से व्यंग्य किया है।"

श्रवण कुमार गोस्वामी के साहित्य पर अनेक शोधार्थियों ने काम किया। इन शोधार्थियों में पी-एच.डी. उपाधि शोधार्थी सम्मिलित है। प्रजातांत्रिक शासन व्यवस्था का साहित्य में अपेक्षित प्रभाव पड़ा है और तदनुसार जीवन की व्याख्या में परिवर्तन आया, जिसे सामाजिक यथार्थ की संज्ञा मिली। भारतीयों को सम्मान और अधिकार प्राप्त करने के लिए कई वर्षों तक संघर्ष करना पड़ा।

तब कहीं जाकर सन् 1947 में आजादी प्राप्त हुई। अन्य स्वतंत्र राष्ट्रों की अपेक्षा भारतीय भाषाओं के उपन्यासों में राजनीतिक संस्पर्ष इसलिए पर्याप्त अंतर से आया। सभ्यता के विकास के साथ-साथ जीवन में इतनी सघनता आ जाती है कि राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक स्थितियों को अलग करना असंभव हो जाता है। राजनीतिक चेतना, आर्थिक विकास, यातायात और दूरसंचार के साधनों की सुलभता से ग्रामीण और शहरी सामाजिक जीवन सघनतर होता जा रहा है। ज्ञान-विज्ञान की निरंतर वृद्धि हमारे संचित अनुभवों, विश्वासों और मान्यताओं में संशोधन कर नया जीवन दर्शन प्रस्तुत करती रही है। "समाज और सामाजिकता नित्य परिवर्तनशील है। व्यक्ति-व्यक्ति के अंतःसंबंधों को इसी परिवर्तनशीलता में देखा-परखा जा सकता है। आज राजनीतिक चेतना इतनी गहरी, सघन और व्यापक होती जा रही है कि व्यक्ति अपनी अस्मिता के प्रति अधिक सचेत है। उसकी यह चेतना ही आर्थिक आधार और संपन्नतर जीवन के लिए उसे प्रेरित करती है।"

उपन्यास जंगलतंत्रम मूल रूप से राजनीतिक चेतना से समन्वित उपन्यास है। इसमें उन्होंने बिलकुल नये शिल्प विधान का प्रयोग करते हुए मनुष्येतर प्राणियों के माध्यम से जिन विकट परिस्थितियों को अभिव्यक्त किया है, वह अपने आप में बेजोड़ है। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। पूरे सामाजिक ढाँचे में सांस्कृतिक, आर्थिक और राजनैतिक विचार और व्यवहार एक-दूसरे में गुंथे में रहते हैं। इनको अलग करना संभव नहीं है। इनमें जब असंगति और विकृति उत्पन्न होती है, तब एक सजग साहित्यकार अपनी लेखनी के माध्यम से एक-एक सत्य को उघाड़ता चलता है। जब उसे अपनी अभिव्यक्ति के लिए मनुष्य समाज उपयुक्त दिखाई नहीं देता तब प्राणी जगत की ओर रूख करता है। अनेक साहित्यकारों ने प्राणी जगत के निरीह जानवर 'गधे' को लेकर अनेक प्रकार का साहित्य रचा हैं। 'सांप' को लेकर कविताएँ की है। गिरगिट से मनुष्य के बदलते रूख की तुलना की है। 'जंगलतंत्रम' उपन्यास में श्रवण कुमार गोस्वामी ने आजादी के बाद भारत द्वारा अपनाये गए उस तंत्र को अपने कथ्य का विषय बनाया है, जहाँ स्थितियाँ बद से बदतर होती जा रही है। प्रेमचंदोत्तर काल में उपन्यासकारों की सामाजिक चेतना राजनीतिक चेतना की संपृक्ति से सघनतर हुई। "वृंदावनलाल वर्मा ने राजनीतिक और सामाजिक स्थितियों को अभिन्न माना है। वे परस्पर इतने गुम्फित हैं कि बिलगाना असंभव नहीं तो कठिन अवश्य है। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात तो स्थितियाँ और सघनतर हुई हैं। आज का साधारण-सा राजनीतिक निर्णय भी सामाजिकता को दूर तक प्रभावित करता है। राजनीतिक जागरण सामाजिक विकास की प्रेरणा देता है।" राजनीतिक उपन्यास की मूल विशेषता उसकी सम-सामयिक राजनीतिक घटनाएं, राजनीतिक चरित्र और राजनीतिक विचारधारा ही हो सकती है। राजनीतिक घटनाओं और चरित्र प्रधानता के कारण जा उसका एक स्वरूप चरित्र प्रधान या घटना चरित्र सापेक्ष्य हो सकता है वहां वह राजनीतिक वर्ण्य वस्तु, देशकाल व उद्देश्य को लेकर भी राजनीतिक स्वरूप ग्रहण कर सकती है। उसका क्षेत्र अत्यन्त विशाल है। ज्ञान और आनंद दोनों की पूर्ति राजनीतिक उपन्यासों से संभाव्य है और इसके लिए उपन्यास के बीच चूहा सबसे छोटा, कमजोर, पिछड़ा, अशिक्षित, दलित और दुखी

है इसलिए इसकी उन्नति एवं समृद्धि पर हम सभी ज्यादा ध्यान देंगें। चूहे की शिकायतों को जड़ से मिटा देना हमारा संकल्प होगा।" आज आजादी के इतने वर्षों बाद जब हम पीछे मुड़कर अपने तंत्र की समीक्षा करते हैं तो पाते हैं कि लोकतंत्र में आम आदमी की स्थिति पशु से भी दयनीय है। "आज का प्रजातंत्रवाद भी मनुष्य जीवन की विडंबनाओं, संघर्षों और आंतरिक भग्नता से बचा सकेगा, इसमें उसे संदेह हो गया हैं।" श्री गोस्वामी की प्रजातंत्र के प्रति यह तल्खी जायज और देखने योग्य है कि, "जंगलतंत्रम का एक संविधान होगा, जिसमें कहा जाएगा जंगलतंत्र ऐसी शासन व्यवस्था है जो जंगल के लोगों की है, जंगल के लोगों द्वारा संचालित है और जंगल के लोगों के लिए है।" उपर्युक्त स्थिति के अनुसार यहां चूहा सबसे छोटा और शोषित वर्ग के अंतर्गत आया है। जंगलपति सिंह के उच्चाधिकारी पद पर आसीन होने से वर्ण व्यवस्था का संचालन स्वयं उसके द्वारा होता है। योरोप में हुए औद्योगिक विकास ने उपनिवेशी देशों में राजनीतिक स्वतंत्रता का आग्रह उत्पन्न किया। यद्यपि भारत में राष्ट्रीय चेतना की लहर पिछले दो दशकों में ही प्रखरतर हो चुकी थी तथापि सन् 1942 में महात्मा गांधी के भारत छोड़ो आन्दोलन ने स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए हमें कटिबद्ध कर दिया। 15 अगस्त 1947 को भारत स्वतंत्र हुआ स्वतंत्रता प्राप्ति के साथ ही भारत-पाक का विभाजन हुआ। एक ओर भयंकर दंगों से उत्पन्न स्थितियों से हमें जूझना पड़ा, दूसरी ओर विस्थापितों के पुनर्वास के लिए साधन जुटाने पड़े। राजनीतिक स्वतंत्रता ने हमारे सोये हुए सपनों को जगाया। हमारी आकांक्षाएं कुलाचें मारने लगी। हमने आर्थिक विकास, सामाजिक न्याय, धार्मिक सद्भाव और सांस्कृतिक पुनरूद्धार के जो सपने संजोए थे, उनकी पूर्ति के लिए प्रचार किया गया था उसके पासंग तक कभी पहुंच नहीं पाए। राजनीति के दंश से साहित्यकार तिलमिला उठा। उसने 'लोकतंत्र' की तुलना 'जंगलतंत्र' से की। श्रवण कुमार गोस्वामी का 'जंगलतंत्रम' उपन्यास फैंटेसी पर आधारित है। जिसमें कड़वी सच्चाई को उजागर किया गया है। लोकतंत्रात्मक प्रणाली में अधिकतम लोगों के लिए अधिकतम सुख की व्यवस्था तो है, लेकिन सभी लोगों के लिए न्यूनतम सुख-सुविधाओं की गुंजाईश नहीं है। इसलिए प्रजातंत्र में सरकार जब-तब जिस-तिस को रियायतें देकर खुश करती रहती है। 'जंगलतंत्रम' में श्री गोस्वामी ने लिखा है, "मोर, तू तो कुछ समझता ही नहीं। इस संविधान में चूहे को दिए गए आश्वासन भी शामिल होंगे, जिन्हें देखकर चूहा और उसकी बिरादरी के लोग संतुष्ट रहेंगे और जब तक ये लोग संतुष्ट रहेंगे, हमारे ऊपर किसी प्रकार का भी संकट नहीं आ पाएगा। बोल, समझ गया कि नहीं ?'

"समझ गया हूजुर! आपकी नीति लाजवाब है।"

"बेवकूफ तू इसे नीति कहता है ? यह नीति नहीं राजनीति है, राजनीति। बोल समझ गया कि नहीं।"1

आजादी के बाद से नेताओं ने आम आदमी को अपने भाषण और नारों में सदा ऊँचा स्थान दिया, लेकिन उसकी दशा सुधारने के प्रति सदा उदासीन ही बने रहे। उन्होंने हमेशा उस 'लोक' की उपेक्षा की जिसके बल पर उनका 'तंत्र' कायम है। नेताओं ने लोकतंत्र की रक्षा की दुहाई देकर और झूठे आश्वासनों के घेरे में लेकर सदा उसका भावनात्मक शोषण किया। पार्टी को संकट में

घिरते देख हवा में एक नया नारा उछाल दिया जनता के खेलने के लिए।

"सिंह ने भाषण शुरू किया - जंगलतंत्र का मतलब एक ऐसा राज्य होता है, जिस पर जंगल के सभी लोगों का समान अधिकार हो। इस राज्य में हम सभी बराबर हैं, प्रजा होने के साथ-साथ राजा भी हैं। सिर्फ प्रशासन की सुविधा और जंगल की एकता के लिए मैं राजा बना हूँ। परंतु सच्ची बात तो यह है कि मैं आप लोगों का सबसे बड़ा सेवक हूँ। आपकी सेवा ही मेरा धर्म है। मोर एक ऐसा सेवक है जो राज्य के नियमों के पालन के लिए उत्तरदायी है। इसी तरह नाग है जो वाणिज्य व्यापार चलाता है। पर, एक वर्ग ऐसा भी है जिसे हर हुकूमत में दबाकर रखा गया और वह चूहा - जैसे छोटे जीव-जंतुओं का वर्ग, जिसे आम जनता का वर्ग भी कहा जाता है। इस वर्ग के लोग कमजोर हैं, इसलिए दूसरों ने इस कमजोरी का नाजायज फायदा उठाया। लेकिन अब ऐसा नहीं हो सकेगा। चूहा और उसके जैसे सारे छोटे जीव भी हमारे ही समान हैं। जंगलतंत्र के संविधान में उन सबको बराबरी का दर्जा दिया गया है। अब जमाना बदल गया है और जंगलतंत्र का जमाना है। अब चूहे की ओर और उसके जैसे छोटे-छोटे प्रणियों की ओर कोई घृणा से नहीं देख सकता। दुनिया के साथ-साथ आगे बढ़ने की कसम हमने खाई है। जंगल के जीवों की उन्नति के लिए अनेक उपाय किए जा रहे हैं- स्कूल कॉलेज की स्थापना होगी, कल-कारखानों और नदियों की धारा को रोकने वाले बांधों का निर्माण किया होगा, जंगल विकास के लिए बड़ी-बड़ी योजनाएं बनेंगी और हर क्षेत्र में हम आगे बढेंगे। दुनिया को हम दिखा देगें कि हमारा जंगलतंत्र कितना मान और शक्तिशाली है। हम जंगलतंत्र में पक्का विश्वास करते है। इसका सबसे बड़ा प्रमाण यह है कि हमारे यहां भी आम चुनाव होंगे। और यहां के लोग उसमें उम्मीदवार तथा मतदाता की हैसियत से भाग ले सकेंगे। मैं भाषण में विश्वास नहीं करता हूँ। आज से हमारा नारा 'आराम हराम है'। बस। जय जंगल।" आजादी के बाद देश जैसे-जैसे तरक्की के रास्ते पर अग्रसर होता गया, भौतिक समृद्धि की नयी ऊँचाईयों को स्पर्श करता गया, वैसे-वैसे उसका नैतिक पतन भी होता प्रशासन में व्याप्त भ्रष्टाचार को अलग प्रकार से अभिव्यक्त किया है। जब नाग व्यापारी शासन के नियमों के उल्लंघन कर अधिक कमाई करने लगता है तब मोर अफसर जांच पड़ताल के लिए आ धमकता है। और कहता है, "मैं वही रिर्पोट दूंगा जो सच है।" शाम को हलका अंधेरा जब चारों ओर छाने लगा, तब नाग निकला। रात होते-होते वह मोर की कोठी में पहुंच गया। नाग को देखकर मोर ने आश्चर्य से पूछा, " अरे नाग, तुम इस समय यहाँ ?"

"मेम साहब के लिए एक तोहफा लेकर आया हूँ। नाग ने बंडल बढ़ाते हुए कहा।"

"मोर की मेम भी वहीं मौजूद थी। उसने तोहफा स्वीकार करते हुए कहा, "मिस्टर नाग, आप साहब से बातचीत कीजिए मैं आप लोगों के लिए कुछ भिजवाती हूँ।"

"चूहा सामान न मिलने की शिकायत सिंह से कर देता है। अपनी शिकायत से नाग खफा हो जाता है। इसके बाद जब, "एक दिन चूहे ने नाग की दुकान पर जाकर पूछा भाई जी मुझे चावल चाहिए।"

"मिलेगा पर दुगुने दाम पर।" नाग का उत्तर था।"

"ऐसा क्यों भाई जी ?"

"सरकार गेहूँ ही दे दीजिए।"

"यह भी दुगुने दाम पर मिलेगा"।

"ऐसा क्यों भाई जी"।

"सरकारी कंट्रोल हो गया है।"

"फिर मकई तो होगी।" .

"नहीं।"

"वाह, अब आप ही बताइये मैं क्या खाऊँ।"

"मुझे खा लो।" "भाई जी आप नाराज क्यों होते हो ? जरा आप ही सोचिए कि मेरा पेट कैसे भरेगा ?"

"बस ज्यादा बकबक मत करो। मैं तुम्हारी चाल खूब समझता हूँ। सरकार से तुम मेरी शिकायत करते हो और मुझसे ही सस्ते भाव पर अनाज मांगते हो। जाओ वहीं चले जाओ जहाँ तुमने मेरी शिकायत की थी।"

एक-दूसरे पर आरोप लगाकर भ्रष्टाचार करने वालों की एक लंबी श्रृंखला बन गई है। हर नीचे वाले का यही जवाब होता है कि वह यह सब ऊपर वाले के लिए करता है। सभी अपने को निर्दोष बताते हैं। जैसा कि "नाग ने चूहे से कहा, आप समझते हैं कि धांधली में करता हूँ, जबकि सच्चाई कुछ और ही है। आप तो जानते ही हैं कि मुझे मोर साहब के इशारों पर नाचना पड़ता है। यदि मैं इधर-उधर न करूं, तो मोर साहब के पूरे खानदान की फरमाइशे कैसे पूरी कर सकता हूँ ?"

"तो क्या मोर साहब रिश्वत लेते है?"

"सो मैं कैसे कहूँ।"

"पर वह तो मेरे सामने अपने को निर्दोष बता रहे थे।"

"बस इसी तरह सब कुछ चलता है। भाई जी, सभी अपने को दूध का धोया बताते हैं।"

"चूहे तूने जो कुछ भी कहा वह ठीक है, पर अदालतों के जज मोर भाषा ही जानते है, जंगली भाषा नहीं।"

"इसका अर्थ यह हुआ दीनबंधु कि हम खून करेंगे जंगली भाषा में और हमें फांसी मिलेगी मोर भाषा में। कमाल है।"

"चूहे यह व्यवस्था सिर्फ कुछ ही दिनों के लिए है।"

यह कुछ दिन होते-होते पूरी आधी सदी बीत गई, लेकिन भाषा हम लोगों ने अंगरेजी ही रखी। इससे बड़ा दुर्भाग्य किसी देश का और क्या हो सकता है कि आम जनता को न्याय उस भाषा में मिलता है जिस भाषा को वह जानती ही नहीं। अंगरेजी भाषा बोलने से व्यक्ति का रूतबा बढ़ जाता है। उसके सारे गुनाहों पर पर्दा पड़ जाता है। और उसके साथ विशिष्ट व्यवहार किया जाने लगता है। यहां तक कि मरने से भी बचा जा सकता है। स्वातंत्र्योत्तर और साठोत्तर भारतीय राजनीति की अस्थिर नीतियों ने देश के लक्ष्य की प्राप्ति में अत्यधिक बाधा पहुंचाई। इसका कारण सिद्धांतों की कमी नहीं वरन उनके व्यवहारिक धरातल पर न उतर पाना रहा। भ्रष्ट नेताओं की अदूरदर्शिता के कारण अराजक तत्वों को बढ़ावा मिला और राष्ट्रीय राजनीति गुमराह होती गई। साठोत्तरी हिन्दी उपन्यासकारों ने राजनीति में बढ़ती सिद्धांतहीनता और अवसरवाद के बढ़ते प्रभाव का व्यापक चित्रण किया है। भाई-भतीजावाद और जाति-बिरादरीवाद ने मिलकर शासन तंत्र में गुणवान एवं योग्य व्यक्तियों के स्थान पर अयोग्यों को भर्ती किया, जिससे सारे राष्ट्र का वातावरण दूषित हो गया। चोर-चोर मौसेरे भाई की कहावत को चरितार्थ करते हुए भ्रष्ट नेताओं ने आपस में समझौते कर लिए।

जनता को दिखाने के लिए नेता आपस में लड़ाई करते लेकिन ऊपर और भीतर से पक्ष-विपक्ष चित्रण किया है। दल बदलू को उसकी भाषा से ही पहचाना जा सकता है। वह गिरगिट के समान ही होता है। "गिरगिट ने कहा, "देखो, भाइयों, इस बार चुनाव की हवा कुछ अजीब है। नाग के पास पैसा है, इसलिए वह चुनाव में जीत भी सकता है मगर सिंह के पास मोर है और मोर से नाग बेतरह डरता है। मुझे तो लगता है कि सिंह ही नाग को पछाड़ देगा। यों कुछ सीटें नाग को भी मिल सकती है।" उसकी भाषा से गिलहरी उसे पहचान लेती है और कहती है, "तू नाग और सिंह दोनों का दलाल है। तू रंग बदल-बदल कर दोनों से धन लेता है और मतदाताओं को बहकाता है। सच-सच बता तू सिंह और नाग दानों के लिए झूठे-झूठे प्रचार पत्र लिख रहा है या नहीं ? मैं सब जानती हूँ। सिंह ने तुझे लोभ दिया है कि अगर वह जीत गया तो वह तुझे विद्याधिपति बना देगा। नाग ने भी तुझे कहा कि अगर वह जीत गया तो तुझे अपनी किसी कंपनी का डाइरेक्टर बना देगा। बोल मैं झूठ बाल रही हूँ क्या ?" नेवले ने गिरगिट की ओर झपट्टा मारते हुए शोर मचाया - गिरगिट ने देखा कि खतरा सिर पर है तो उसने तुरंत अपने शरीर का रंग बदल लिया। लोग उसे देख भी नहीं सके और वह पास ही एक पेड़ की सबसे ऊपरी डाल पर जा बैठा।"

संपूर्ण राजनीतिक परिदृश्य में दल-बदल एक बहुत घातक बिमारी है। जनता को सीधे-सीधे ठगा जा रहा है। "कानून के छिद्र बंद करना अत्यंत जरूरी हो गया है। 'समय समस्या और सिद्धांत' में जैनेंद्र कुमार ने प्रश्न का जवाब देते हुए कहा है, 'जनतंत्र में अगर विधानसभाओं के लोग अपने-अपने लाभ को प्रथम रखते हैं, उसी आधार पर दल-बदल करने में शर्म नहीं खाते हैं तो वह तंत्र आखिर स्वार्थ का ही तो बना माना जाएगा। मुझे लगता है कि जनतंत्र की पद्धति इस समय कसौटी पर है।"

सन्दर्भ ग्रन्थ

1 हिन्दी व्यंग्य उपन्यास: सिद्धांत और विकास, डॉ.नंदलाल कल्ला , पृष्ठ 184

2 श्रवण कुमार गोस्वामी के जंगलतंत्रम् उपन्यास में व्यंग्य के विविध आयाम

3 हिन्दी उपन्यास की विकास यात्रा: ब्रह्मस्वरूप शर्मा, पृष्ठ 22

4 .हिन्दी उपन्यास की विकास यात्रा: ब्रह्मस्वरूप शर्मा, पृष्ठ 27-28

1. जंगलतंत्रम: श्रवण कुमार गोस्वामी, पृष्ठ 19-20

2. समसामयिक हिन्दी साहित्य, डॉ.हरिवंश राय बच्चन, पृष्ठ 10 3.

5 जंगलतंत्रम: श्रवण कुमार गोस्वामी, पृष्ठ 22

6 जंगलतंत्रमः श्रवण कुमार गोस्वामी, पृष्ठ 22

7 जंगलतंत्रमः श्रवण कुमार गोस्वामी, पृष्ठ 29

8.जंगलतंत्रमः श्रवण कुमार गोस्वामी, पृष्ठ 31

9.जंगलतंत्रमः श्रवण कुमार गोस्वामी, पृष्ठ 33 2.

10 जंगलतंत्रमः श्रवण कुमार गोस्वामी, पृष्ठ 38

11 जंगलतंत्रमः श्रवण कुमार गोस्वामी, पृष्ठ 26

12.जंगलतंत्रमः श्रवण कुमार गोस्वाम, पृष्ठ 54

13 जंगलतंत्रमः श्रवण कुमार गोस्वामी पृष्ठ 57-58

14 जंगलतंत्रमः श्रवण कुमार गोस्वामी, पृष्ठ 6